1 169

प्रो.(डॉ) मिथिलेश मिश्र
संकायाध्यक्ष-मानविकी एवं विभागाध्यक्ष-संस्कृत
(विभागाध्यक्ष-संस्कृत पूर्णियाँ कॉलेज पूर्णियाँ)

मो.न. 8002850355
पूर्णियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णियाँ बिहार-854301

03.09.2025

संस्कृत शोधार्थिका दिव्या शिवानी के Ph.D शोध प्रबंध- "महाभारत शान्तिपर्व का मानव मूल्य विमर्श" का जाँच- प्रतिवेदन :—

शोधार्थिका दिव्या शिवानी ने मेरे पर्यवेक्षकत्व में नियमों का पालन करते हुए पूरी निष्ठा से अपना शोध-कार्य पूर्ण किया है। यथोचित सारे प्रमाणपत्र शोध प्रबंध के साथ संलग्न हैं। यह अत्यन्त मौलिक कार्य है जिसका लाभ पाठक समाज के साथ-साथ साहित्य एवं भाषा जगत को सुदीर्घ काल तक मिलता रहेगा।

प्रस्तुत शोध प्रबंध में कुल सात अध्याय हैं, जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है —

प्रथम अध्याय में महर्षि वेदव्यास विरचित महाभारत और उसके शान्तिपर्व का सविस्तर ज्ञानात्मक परिचय उपस्थापित हुआ है। यह सनातन संस्कृति का महान ग्रंथ के साथ-साथ संस्कृत साहित्य का द्वितीय उपजीव्य महाकाव्य है। P.T.O.

.(डॉ) मिथिलेश मिश्र

संकायाध्यक्ष-मानविकी एवं विभागाध्यक्ष-संस्कृत

(विभागाध्यक्ष-संस्कृत पूर्णियाँ कॉलेज पूर्णियाँ)

मो.न. 8002850355

पूर्णियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णियाँ बिहार-854301

03-09-2021,

इसके द्वितीय अध्याय में उत्कृष्ट एवं निकृष्ट मानवमूल्यों का परिचय के पश्चात उनका परस्पर तारतम्य दिखाया गया है।

तृतीय अध्याय में महाभारतीय उत्कृष्ट मानमूल्यों का विश्लेषण प्रस्तुत हुआ है जो सराहनीय है।

चतुर्थ अध्याय में निकृष्ट मानव-मूल्यों का विश्लेषण अत्यन्त ज्ञानवर्धक है।

पञ्चम अध्याय में महाभारतीय-मानवमूल्यों का चरित्रनिर्माणात्मक वैशिष्ट्य अवलोकनीय है।

षष्ठ अध्याय में शान्तिपर्व में प्रयुक्त मानवीय मूल्यों की समीक्षा की गयी है।

सप्तम अध्याय समस्त शोधकार्य का उपसंहार है। यहाँ गवेषित तथ्यों का निष्कर्ष दिखलाते हुए पाँच प्रकारों की परिशिष्ट सूचियाँ समाविष्ट हैं।

मैं प्रबल अनुशंसा करता हूँ कि गवेषिका दिव्या शिवानी को एक सामान्य-मौखिकी के पश्चात Ph.D की उपाधि प्रदान की जाय। शुभकामना के साथ -

(मिथिलेश मिश्र)

डॉ० तुलाकृष्ण झा
पू० वि० विश्वविद्यालय आचार्य एवम् अध्यक्ष
लब्धस्वर्णपदकचतुष्टय, पी-एच० डी०
विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग
ति० मॉं० भागलपुर विश्वविद्यालय
भागलपुर - 812007
पूर्व संकायाध्यक्ष - मानविकी

M- 9939963419
☎ : 0641-2423212 (आ०)

पत्रांक : ....
दिनांक : 04.09.2024

गवेषिका का नाम - दिव्या शिवानी
संकायनाम - मानविकी
विषयनाम - संस्कृत
उपाधिनाम - पीएच० डी०
शोधप्रबन्ध का शीर्षक - महाभारत शान्तिपर्व का मानवमूल्यविमर्श
परीक्षकनाम एवं पता :- डॉ. तुलाकृष्ण झा,
से. नि. विश्वविद्यालय आचार्य एवम् अध्यक्ष
विश्वविद्यालय संस्कृत विभाग
पूर्वाध्यक्ष - मानविकी संकाय
ति. मॉं. भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर-7
आवास - लालकोठी, भागलपुर, 812002.

शोधप्रबन्ध का संक्षिप्त प्रतिवेदन

गवेषिका दिव्या शिवानी द्वारा परीक्षणार्थ प्रस्तुत "महाभारत शान्तिपर्व का मानवमूल्यविमर्श" शीर्षक पीएच. डी. शोधप्रबन्ध का आद्योपान्त आकलन कर प्रसन्नता हुई। गवेषिका ने मानवमूल्य-महाकोष महाभारत के विशालतम शान्तिपर्व के मानवमूल्यों का विमर्श किया है, अतः गवेषिका को आशीर्वाद पूर्वक धन्यवाद।

शोधप्रबन्ध में साकल्येन सात अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में महाभारतीय शान्तिपर्व का परिचयात्मक विवरण है। द्वितीय अध्याय में मानवमूल्यों के परिचय के साथ उनके द्विविध भेदों की सूची समाहित है। तृतीय अध्याय में शान्तिपर्वस्थ पचास उत्कृष्ट मूल्यों का विश्लेषण किया गया है। वहीं चतुर्थ अध्याय में एकसठ निकृष्ट मानव-मूल्यों का विश्लेषण है। पञ्चम अध्याय में मानवमूल्यों के चतुर्विध विभाजन प्रस्तुत हैं। षष्ठ अध्याय में मानवमूल्यों की समीक्षा की गई है। यह समीक्षा भी सात वर्गों में विभाजित है। सप्तम अध्याय निष्कर्षरूप है। सभी अध्याय पाद टिप्पणी संवलित है।

तुलाकृष्ण झा
बाह्य परीक्षक · 4/9/24

तुलाकृष्ण झा
...विद्यालय आचार्य एवम् अध्यक्ष
...स्वर्णपदकचतुष्टय, पी-एच० डी०
...श्वविद्यालय संस्कृत विभाग
...ति० माँ० भागलपुर विश्वविद्यालय
भागलपुर - 812007

M- 9939283419
☎ : 0641-2423212 (आ०)

पत्रांक : ....
दिनांक : 04.10.2021,

शोधप्रबन्ध का विस्तृत प्रतिवेदन

शोधप्रबन्ध के परिचयात्मक प्रथम अध्याय में महाभारत का परिचय, उसकी विषयवस्तु, प्रासङ्गिकता, लेखक वेदव्यास का परिचय स्थितिकाल, शान्तिपर्व का वैशिष्ट्य एवं तद्गत मानवमूल्यपरक विषयों का समावेश है।

द्वितीय अध्याय में मानवमूल्य का परिचय, उनके उत्कृष्ट एवं निकृष्ट जैसे द्विविध भेद, उनकी विस्तृत सूची तथा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उनके तारतम्य का वर्णन है।

तृतीय अध्याय में शान्तिपर्वस्थ उत्कृष्ट मानवमूल्यों का विश्लेषण है। इसमें सत्य, क्षमा, दया आदि पचास मूल्य प्रातिस्विक रूप में विश्लेषित है। इन मूल्यों की सम्पुष्टि शान्तिपर्वस्थ वृत्तान्तों से तथा क्वचित् नीतिशास्त्रीय वचनों से की गई है।

चतुर्थ अध्याय में शान्तिपर्वस्थ निकृष्ट मूल्यों का विश्लेषण है। यहाँ भी लोभ, क्रोध, मोह आदि एकसठ मूल्य प्रातिस्विक रूप में विश्लेषित है। इनकी भी सम्पुष्टि शान्तिपर्वस्थ उदाहरणों से तथा क्वचित् नीतिशास्त्रीय वचनों से की गई है।

पञ्चम अध्याय में गवेषिका ने समस्त मानवमूल्यों का सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक जैसे चतुर्विधविभाग पूर्वक वैशिष्ट्य का प्रतिपादन किया है। सामाजिक मूल्यों में सत्य, लोभ, मोह, धर्मपरायणता, सदाचार एवं क्षमा, राजनैतिक मूल्यों में न्याय, अन्याय, चौर्य, निष्पक्षता, शान्तिव्यवस्था तथा सन्तोष धार्मिक मूल्यों में दानशीलता, परोपकार, अहिंसा तथा शरणागत-रक्षा, एवं सांस्कृतिक मूल्यों में पुरुषार्थचतुष्टय, शान्ति, प्रेम, विश्वबन्धुत्व, दान तथा त्याग का सूक्ष्मेक्षिकया परिचिन्तन है। यह गवेषिका के सूक्ष्म मौलिक चिन्तन का परिचायक है।

षष्ठ अध्याय में मानवमूल्यों की समीक्षा की गई है। इसमें भी गवेषिका ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से हिंसा, करुणा, काम, सन्तोष, मान, सत्य क्षमादि सात वर्गों में मानवमूल्यों का विभाजन किया है।

[क्र० पृ० उ.]

हिंसावर्ग में हिंसा, अहिंसा, न्याय, अन्याय, तिरस्कारादि, करुणावर्ग में करुणा, दया, परोपकार, क्रोधाभावादि, कामवर्ग में काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थादि, सन्तोषवर्ग में सन्तोष, असन्तोष, शान्ति, अशान्ति, सरलता आदि, मानवर्ग में मान, अपमान, दम्भ, निर्लज्जता आदि, सत्यवर्ग में सत्य, असत्य, कृपणता, कृतघ्नता आदि तथा क्षमावर्ग में क्षमा, शम, दम, मनसेन्द्रिय-संयम आदि की समीक्षा की गई है। यह विवेचन भी गवेषिका के सूक्ष्मातिसूक्ष्म मौलिक चिन्तन का परिचायक है।

सप्तम अध्याय गवेषित तथ्यों का निष्कर्ष रूप है। सर्वान्त में पाँच परिशिष्ट हैं। सभी अध्याय पर्याप्त पादटिप्पणी से परिपूर्ण है।

निष्कर्ष :- स्वीकृत कार्यविधि में अथक परिश्रम से कार्य किया गया प्रतीत होता है। प्रबन्ध की भाषा सरल एवं सुबोध है। विषय विविक्त है। प्रतिपादन शैली आकर्षक एवं रम्य है। चिन्तन गम्भीर है। इस शोध प्रबन्ध के प्रकाशन से सामान्य जनों का महत् उपकार होगा। अतः विश्वविद्यालय द्वारा इसे प्रकाशित करने की अपेक्षा है।

उपर्युक्त गुणों एवं वैशिष्ट्यों के आधार पर मैं गवेषिका दिव्या शिवानी जी को पूर्णियाँ विश्वविद्यालय, पूर्णियाँ की पीएच.डी. उपाधि प्रदान करने की दृढ़ संस्तुति करता हूँ। गवेषिका की लिखित परीक्षा लेने की आवश्यकता नहीं है।

(डा.) [illegible] झा।
बाह्य परीक्षक ०५/९/२५
से.नि. वि.वि. आचार्य एवम् अध्यक्ष
ति.माँ. भागलपुर (वि.वि. भाग.)

XPURCO Purnea College 166 PAYABLE AT PAR AT ALL LOCAL BRANCHES 29072024
D D M M Y Y Y Y
XPURCO
167

शोधप्रबन्ध-प्रतिवेदन

गवेषिका : दिव्या शिवानी
निर्देशक : प्रो० मिथिलेश मिश्र
संस्था : संस्कृत विभाग, मानविकी संकाय, पूर्णियाँ विश्वविद्यालय

गवेषिका दिव्या शिवानी द्वारा प्रोफेसर मिथिलेश मिश्रजी के निर्देशन मे प्रस्तुत "महाभारत शान्तिपर्व का मानव-मूल्य-विमर्श" विषयक शोधप्रबन्ध का मैने आद्यन्त अवलोकन किया। संक्षिप्त भूमिका, परिशिष्टादि से युक्त यह प्रबन्ध सात अध्यायों मे विभक्त है। प्रथम अध्याय मे महाभारत एवं महाभारतकार महर्षि वेदव्यास के परिचयादि के साथ-साथ शान्तिपर्व के वैशिष्ट्य तथा तन्निर्दिष्ट मानवमूल्यपरक तथ्यों का सम्यक् निर्देश किया गया है। द्वितीय अध्याय मे मानवमूल्य का परिचय, उत्कृष्ट एवं निकृष्ट मानवमूल्यों का स्वरूप एवं सूची और परिस्थितिविशेष मे इन मूल्यों के तारतम्य (स्वरूप-विपर्यास) का प्रकाशन गवेषिका ने कुशलता से किया है। तृतीय अध्याय मे महाभारतनिर्दिष्ट सत्य, क्षमा, दम, सरलता आदि उत्कृष्ट मानवीय मूल्यों का विशद विश्लेषण प्रशंसनीय है। चतुर्थ अध्याय मे महाभारतीय निकृष्ट मानवीय मूल्यों का व्यापक विश्लेषण भी प्रभावकारी है। पंचम अध्याय मे महाभारतीय मूल्यों के वैशिष्ट्यप्रकाशन के क्रम मे सत्य, निष्पक्षता आदि विविध सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के महत्त्व की चर्चा विशदता एवं गहनता से की गयी है। षष्ट अध्याय मे अहिंसा, करुणा, काम, सन्तोषादि मूल्यों का हिंसा-करुणा-कामादि वर्गों के अन्तर्गत समावेश कर तत्तत् मूल्यों की समीक्षा गवेषिका ने सुस्पष्टता से की है। अन्तिम सप्तम अध्याय मे समस्त अध्ययन का निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है। अन्त मे कतिपय परिशिष्टों मे महाभारतीय मानव-मूल्यों की उपयोगी सूची तथा सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची संलग्न है।

महर्षि वेदव्यास द्वारा प्रतिपादित व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के अभ्युत्थान की अत्युदात्त भावना से ओतप्रोत आदर्श जीवनमूल्यों की चर्चा वर्तमान परिप्रेक्ष्य मे अत्युपयोगी है। भारतीय संस्कृति के त्यागात्मक यद्वा वासनामुक्त मौलिक स्वरूप का आधार ये जीवनमूल्य ही हैं। अपसंस्कृति के उन्मूलनपूर्वक धर्मप्राण सनातन संस्कृति की पुनःस्थापना एवं दृढीकरण के महनीय उद्देश्य से इन मूल्यों के स्वरूप एवं महत्त्व के प्रकाशन मे प्रतिभाशालिनी गवेषिका का प्रयास अत्युपादेय अत एव प्रशंसनीय है।

गवेषिका ने पर्याप्त अध्ययन करके विषयों को मौलिकता से प्रबन्ध मे प्रस्तुत किया है जिसमे उसके श्रम और प्रतिभा का स्पष्ट परिचय मिलता है। विषय की प्रस्तुति मे यद्यपि कतिपय स्थलों मे भाषिक एवं अन्यप्रकारक स्खलन हुए हैं, तथापि वे विषय के गाम्भीर्य के समक्ष उपेक्षणीय हैं। इन स्खलनों का परिमार्जन एवं सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची का अक्षरक्रम से व्यवस्थापन प्रकाशन से पूर्व अवश्य कर लेना चाहिये।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध के परीक्षण से हमारा यही निष्कर्ष है कि गवेषिका दिव्या शिवानी को संस्कृत विषय मे पीएच्०डी० उपाधि प्रदान की जाय।

04.9.24

(श्यामानन्द मिश्र)
आचार्य, साहित्य विभाग,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

दिनांक : ०६/०६/२०२४